जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

6 नवंबर 2023

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया वीसी प्रोफेसर नजमा अख्तर द्वारा संपादित दो पुस्तकों का विमोचन
-पुस्तकें: "मन की बात: ए मीडियम ऑफ़ कम्युनिकेशन" और
"रिवोल्यूशनाइज़िन्ग एजुकेशन: नेविगेटिंग द एनईपी 2020 एरा"

एक किताब जिसका शीर्षक है "रिवॉल्यूशनाइज़िंग एजुकेशन: नेविगेटिंग द एनईपी 2020 एरा" और एक कॉफ़ी टेबल बुक जिसका शीर्षक है "मन की बात: ए मीडियम ऑफ़ कम्युनिकेशन", दोनों का संपादन प्रो. नजमा अख्तर (पद्मश्री), कुलपति, जामिया मिलिया इस्लामिया द्वारा किया गया है, दोनों का आज विश्वविद्यालय के मीर अनीस हॉल में आयोजित एक प्रभावशाली समारोह में विमोचन किया गया। दोनों पुस्तकें मेसर्स वीएल मीडिया सॉल्यूशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) के निदेशक प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी समारोह के मुख्य अतिथि थे, जिसमें विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों और संकाय सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रो. धनंजय जोशी, प्रो. मोना खरे, प्रो. ऐजाज मसीह, प्रो. एम. अफजल वानी और प्रो. रेखा सक्सेना ने भी संबोधित किया।

"रिवॉल्यूशनाइज़िंग एजुकेशन: नेविगेटिंग द एनईपी 2020 एरा" पुस्तक विद्वानों के लेखों का एक संग्रह है, जो एनईपी 2020 के व्यापक स्पेक्ट्रम को कवर करती है, जो एनईपी 2020 के लगभग हर पहलू पर गहराई से प्रकाश डालती है। यह पुस्तक इस बात पर एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है कि कैसे 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) भारत में शैक्षिक परिदृश्य को गहराई से बदलने की क्षमता रखती है।

पुस्तक चार खंडों में है, प्रत्येक खंड में क्रमशः पाँच, छह, पाँच और तीन अध्याय हैं। अनुभाग एनईपी 2020 पर विचार, एनईपी 2020 का संदर्भ, एनईपी 2020 और अनुभवजन्य साक्ष्य, शिक्षा और कुछ अंतर्राष्ट्रीय अनुभव हैं।

'एनईपी 2020 पर विचार' शीर्षक वाले पहले खंड में योगदानकर्ता प्रोफेसर सिद्धेश्वर रामेश्वर भट्ट, डॉ सहकिला शमशु, प्रोफेसर मोना खरे, संध्या दुबे और प्रोफेसर रेखा सक्सेना जैसे प्रसिद्ध विद्वान हैं।

"एनईपी 2020 का संदर्भ" शीर्षक वाले दूसरे खंड के लेखों का समापन शांतिश्री धूलिपुड़ी पंडित, प्रो. राघवेंद्र पी. तिवारी, प्रो. गणेश शंकर, प्रो. खगेंद्र कुमार, प्रो. ऐजाज़ मसीह और सविता कौशल जैसे प्रतिष्ठित शिक्षाविदों द्वारा किया गया है।

"एनईपी 2020 और अनुभवजन्य साक्ष्य" नामक तीसरे खंड में योगदानकर्ता प्रो. सरोज शर्मा, डॉ. सुनीता जोशी कथूरिया, प्रो. मोहन मेमन, प्रो. वसंत भट्ट, प्रो. रामा मैथ्यू और प्रो. फलचंद्र भंडीगड़ी जैसे विद्वान हैं।

चौथे खंड 'शैक्षिक और कुछ अंतर्राष्ट्रीय अनुभव' में क्रमशः मैरी मैक एंड्रयू, प्रोफेसर, ले अन्ह विन्ह, गुयेन होंग लियन के दो विद्वान लेख शामिल हैं।

मैरी मैक एंड्रयू द्वारा अध्याय का शीर्षक "क्यूबेक के आप्रवासी मूल के युवाओं के शैक्षिक मार्गों में असमानताएं: प्रणालीगत कारकों की भूमिका का आकलन" आप्रवासी मूल के युवाओं के बीच शैक्षिक असमानताओं के अंतर्निहित कारणों की जांच करता है। 'वियतनाम में सतत विकास के लिए शिक्षा: नीतियां, रूपरेखा और प्रथाएं' शीर्षक वाला दूसरा योगदान 21वीं सदी की शुरुआत से वियतनाम में सतत विकास (ईएसडी) नीतियों और प्रथाओं के लिए शिक्षा का विश्लेषण प्रदान करता है।

पुस्तक का प्रत्येक अध्याय प्रौद्योगिकी, योग, कानूनी शिक्षा और स्कूल प्रबंधन जैसे विभिन्न पहलुओं पर ध्यान देने के साथ भारत में शिक्षा की समझ, इसके विकास, चुनौतियों और 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ संरेखण में योगदान देता है।

"मन की बात: ए मीडियम ऑफ़ कम्युनिकेशन" शीर्षक वाली कॉफी टेबल बुक जामिया के संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं और चुनिंदा कला कार्यों द्वारा किए गए शोध अध्ययनों के संक्षिप्त उद्देश्य और निष्कर्षों की एक अनूठी सचित्र प्रस्तुति है। जामिया ने संचार के माध्यम के रूप में 'मन की बात' (एमकेबी) पर कई अध्ययन किए। अध्ययनों से पता चलता है कि माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने शक्तिशाली पहल के माध्यम से देश के नागरिकों के साथ दो-तरफा संचार प्रक्रिया विकसित की है। एमकेबी एक ऐसे मंच में तब्दील हो गया जहां प्रधानमंत्री सीधे देश की जनता से संवाद करते हैं।

एमकेबी ने 30 अप्रैल, 2023 को अपना 100वां संस्करण पूरा किया। अनुसंधान अध्ययनों को विशेष अवसर के साथ मेल खाने की योजना बनाई गई थी। विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम के संचार पहलुओं और प्रभाव पर केंद्रित छात्रों के लिए एक कला प्रतियोगिता भी आयोजित की। शोध आलेख माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित पत्रिका 'मीडिया मीमांसा' में प्रकाशित हुए थे। विश्वविद्यालय ने एम.एफ. हुसैन आर्ट गैलरी (जामिया) में 28 अप्रैल, 2023 को एक संगोष्ठी और छात्रों के कला कार्यों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

शोध अध्ययनों का उद्देश्य एमकेबी के अत्यंत लाभकारी प्रभाव के कई प्रमुख पहलुओं का पता लगाना था और उन तर्कों की जांच की गई जो रेडियो शो को न केवल एक अनुकरणीय संचार नेतृत्व मिसाल के रूप में स्थापित करते हैं बल्कि देश में सकारात्मक बदलाव के लिए एक तारकीय माध्यम भी बनाते हैं। ये अध्ययन भारतीय आबादी के विभिन्न वर्गों में सार्वजनिक चर्चा पर रेडियो शो के सकारात्मक प्रभाव को उजागर करते हैं। ये अध्ययन अपने लक्ष्य तक पहुंचने में एमकेबी की प्रभावकारिता का भी मूल्यांकन करते हैं

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया